आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2602 • उदयपुर, मंगलवार 08 फरवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कूबड़ मुक्त हुई लवली

रायबरेली (उत्तरप्रदेश) जिले के कस्बे में गार्ड की नौकरी करने वाले मोतीलाल ने अपनी बेटी लवली को पढ़ा–लिखा कर इस योग्य बनाने का संकल्प लिया कि वह परिवार और समाज के लिए मिसाल बन सके। जन्म के बाद उसे बड़े लाड़–प्यार से पाला और 5 वर्ष की उम्र में स्कूल दाखिले के बाद से ही मोतीलाल दिनरात मेहनत करने लगे। पूरा परिवार उन्हीं पर आश्रित था। लवली 8 वर्ष की हुई तो उसकी रीढ़ में यकायक दर्द रहने लगा और एक गांठ सी उभरती दिखाई दी। माता–पिता चिंतित हो गये। स्थानीय अस्पताल में इलाज चला पर गांठ बढ़ते–बढ़ते कुबड़ का रूप लेने लगी, बच्ची को चलने–फिरने और स्कूल बेग उठाने में भी तकलीफ होने लगी। मोतीलाल को अपना सपना बिखरता दिखाई देने लगा। उन्होंने कर्ज लेकर भी लवली को लखनऊ–दिल्ली में दिखाया लेकिन जो खर्च बताया गया, उसका इन्तजाम उनके बूते के बाहर था। लवली 13 वर्ष की हो गई। पीठ पर कुबड़ का बोझ बढ़ गया। परिवार को सामने रोज मरने और जीने जैसी स्थिति थी। इसी बीच एक दिन उन्हें किसी ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी की उम्मीद की एक किरण के रूप में मिली। मोतीलाल बिटिया को लेकर उदयपुर आए और संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी भैया से भेंट की। भैया ने तत्काल शहर के नामी स्पाइन विशेषज्ञ हॉस्पीटल से सम्पर्क किया। जहां से कुबड़ निकालने व बच्ची के सामान्य जीवन जीने का आश्वासन मिला। ऑपरेशन के लिए संस्थान ने 3 लाख का भुगतान किया।

बेटी कुबड़ से मुक्त हो गई और मोतीलाल को उसका सपना साकार करने का अवसर मिल गया। पूरा परिवार लवली की नई जिन्दगी के लिए दानवीरों को बारम्बार दे रहा धन्यवाद।

सासाराम (बिहार), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का कम सतत कर रहा है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 16 जनवरी 2022 को तान्या विकलांग संस्थान, सासाराम में संपन्न हुआ। शिविर शविर में रजिट्रेशन 133, कृत्रिम अंग माप 20, कैलिपर माप 20, ऑपरेशन चयन 29 का रजिट्रेशन, की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल (समाजसेवी), अध्यक्षता श्री डॉ. राजेन्द्र जी शुक्ला (अध्यक्ष तान्या विकलांग संस्थान

सासाराम), विशिष्ट अतिथि श्रीमति मीना जी चौहान (सदस्य), श्री सुरेन्द्र जी अग्रवाल (समाजसेवी), श्री राजीवकुमार जी शुक्ला (सदस्य), श्री रवि जी तिवारी (कोषाध्यक्ष), डॉ अमीत जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), कैलीपर्स माप टीम श्री पंकज जी (पी एन डों), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी,श्री बहादुर सिंह जी, श्री सत्यनारायण जी (सहायक), ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन एवं भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
12 फरवरी 2022 प्रातः 11.00 बजे से

गीता विद्यालय मंदिर, 25 बी, महावीर सोसायटी, पारस सोसायटी के सामने पी.एन. मार्ग, जामनगर (गुजरात)

मधुबन गेस्ट हाउस नियर, त्यागी हॉस्पिटल, सासनी गेट, आगरा रोग, अलीगढ़ - उ.प्र.

बाबालाल महाराज जी मंदिर, हनुमान गेट, जगधारी, यमुनानगर- हरियाणा

13 फरवरी 2022
होटल कम्फर्ट, हॉस्पिटल रोड, मण्डी - हिमाचल

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
+91 7023509999
+91 2946622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
13 फरवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

ग्राउण्ड करमा रोड, औरंगाबाद - बिहार

अग्निहोत्री गार्डन, सदर बाजार, होशगाबाद, म.प्र.

माता बाला सुन्दरी प्रांगण, शहजादपुर, जिला-अम्बाला

19 फरवरी 2022
बजरंग व्यायामशाला, कार शोरुम के सामने, पटेल मैदान के सामने, अजमेर

20 फरवरी 2022
गांधी मैदान, मिर्जा गालिब कॉलेज, चर्च रोड, गया-बिहार

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

चलने लगे लडखड़ाते कदम, जागा विश्वास जिन्दगी के लिये

शब्बीर हुसैन के परिवार में छः सदस्य है। पिता जी कॉस्मेटीक की दुकान चलाते हैं। जन्म के डेढ़ वर्ष बाद अचानक तेज बुखार से शब्बीर बेहोश हो गया। और होश आने पर उसने पाया कि उसके पांव पूरी तरह बेजान हो चुके थे। पूरा शरीर निष्क्रिय हो चुका था। श्री गुलाम मोहम्मद पिता ने शब्बीर को श्री नगर के एक अस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने बताया कि शब्बीर को पेरेलाइसिस हो चुका है इसका कोई इलाज नहीं है। गुलाम मोहम्मद ने शब्बीर को अन्य कई अस्पतालों में दिखाया लेकिन कहीं से भी आशाजनक उत्तर न मिलने पर गुलाम मोहम्मद टूट से गये।

एक दिन टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम देखकर गुलाम मोहम्मद के दिल में शब्बीर के पांवों पर चलने की उम्मीद जागने लगी।

कुछ दिन कार्यक्रम देखने के पश्चात् उन्होंने संस्थान में फोन किया और संस्थान से सकारात्मक उत्तर पाकर गुलाम मोहम्मद अपने पुत्र शब्बीर को लेकर नारायण सेवा संस्थान में आये । और शब्बीर के पांवों के दो सफल ऑपरेशन हुए शब्बीर के पांवों में नई जान आने लगी । ऑपरेशन से पूर्व शब्बीर की टांगे टेढ़ी थी। वह चलने – फिरने में बिल्कुल ही असमर्थ था। ऑपरेशन के बाद शब्बीर सामान्य रूप से अपने पांवों पर खड़ा होकर चलने लगा है।

शब्बीर जैसे ओर भी कई दिव्यांग – बंधु जिनका जीवन घर की चार दिवारी तक ही सिमट कर रहा गया है, उन्हें अपने पांवों पर खड़ा कर जीवन की मुख्यधारा में शामिल करने का सफल प्रयास नारायण सेवा संस्थान कर रहा है। संस्थान के ये सफल प्रयास आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही संम्भव हो पा रहे है।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

उठी ना लक्ष्मण की आँखें
जकड़ी पलक पांखे।
किन्तु कल्पना घटी नहीं
मुदित उर्मिला हटी नहीं।।

लक्ष्मण जी के हृदय में उर्मिला बिराजमान हो गई। एक ही कक्ष में रोते हुए सुमन्त्र है। सीता माता हाथ जोड़कर कुछ कह रही है। कौशल्या जी के आँसू बह रहे है, लक्ष्मण जी के हृदय में उर्मिला जी क्या बोल रही है? उर्मिला जी कह रही है, प्रभु मुझे ले चलोगे न। मेरी बड़ी बहिना सीता माता जी साथ चल रहीं है, मैं भी आपके साथ चलूँ। मेरी बड़ी इच्छा है, आप स्वीकार कर लेना, आप हाँ भरलो न मेरे देवता, मेरे आराध्य।

दिल एक मन्दिर है.....।।
.....ये ईश्वर का एक घर है।।
ये दिल किसी का तोड़ना मत।
कोई रुठ जाये तो मना लेना।

गुरुदेव ये प्रश्न आ रहा है गुजरात के राजकोट शहर से जहाँ सेवा का ये सुन्दर शिविर के दृश्य हैं। एक मार्मिक कहानी दो भाईयो का है छोटे भाई और बड़े भाई बिल्कुल सगे और निकट थे अचानक किसी बात पर मन–मुटाव हो गया। 8 सालों से दोनो बोलते नहीं है छोटे भाई डिप्रेशन में है?

छोटे भाई डिप्रेशन में है, ये कहाँ का रोग लग गया, ये नहीं बोलने की कुवृत्ति क्यो चल गई? ये मन मुटाव क्यों हो गया, आप गलतफहमी सुलझा क्यो नहीं लेते। बड़ा भाई भी अपना अहम् छोड़कर छोटे भाई के पास चला जावे, और भाई को बोले भाई तूं बोलता नहीं है तो मेरे रातों नींद उड़ जाती है, लाला तूने तो लक्ष्मण भरत की कथा ऐसी सुनी है, तूने हनुमान जी की कथा सुनी है। तुमने सुना युधिश्ठर के चारो भाई जीवनभर साथ रहे। भले भीमसेन जी महान् योद्धा 10,000 हाथियों का बल जिनकी भुजाओं में था। कभी दुर्योधन ने उनके मिठाई में प्रसाद में जहर मिलाकर के तालाब में फेंक दिया था। वहाँ नाग कन्याओं ने उनको प्राप्त किया उनको ऐसे रसायन पिलाये। कि उनमें दस हजार भुजाओं के हाथियों जैसा बल आ गया।

सम्पादकीय

सेवा जब भी, जिस भी भाव से की जाये वह श्रेष्ठ ही है। अनेक लोग सेवा प्रदर्शन के लिये करते हैं, पर इसमें भी क्या बुराई है? किसी की सेवा तो होती ही है। कई लोग सेवा अपने उपकार भाव को प्रकट करने के लिये करते हैं, यह भी सेवार्थी के लिये तो लाभप्रद ही है। कुछ लोग सेवा को पुण्य कार्य समझकर करते हैं, कुछ लोग सेवा को मानवता समझ कर करते हैं तो कुछ कर्तव्यवश। सभी प्रकार की सेवायें सेवादार को जो भी अनुभूति दे किन्तु लाभार्थी को तो लाभ ही पहुँचाती है। सेवा शब्द ही इतना पावन है कि वह भले ही स्वार्थ से भी की जाये तब भी वह सेवा ही है। जिसकी सेवा की जा रही है, उसे तो उसका लाभ मिल ही रहा है।

इन सब सेवाओं में सिरमौर यदि माने तो जब सेवा स्वभाव बन जाये तब वह श्रेष्ठ हो जाती है। मनुष्य का स्वभाव हो जाय किसी की सेवा करना तो वह प्रकृति व परमात्मा के निकट हो जाता है। इसलिये सेवा कैसे भी प्रारंभ करें पर अंततः इसे स्वभाव बनाना है।

कुछ काव्यमय

मनसा, वाचा, कर्मणा
सेवा बने स्वभाव।
तभी मनुज के भाव का,
होता सही उठाव।
सेवा वाले हाथ ही,
पावन माने जाय।
सेवा बने स्वभाव तो,
सेवादार तर जाय।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

कर्मफल

यदि करुणामय खेत हो,
सत्य का बीज उगाय
प्रेम फसल लहराये,
आनन्द के फल खाय।।

आनन्द मंगल छाये महाराज, बोलते–बोलते हृदय की सब मांस पेशियों में आनन्द मंगल छा गया महाराज। भाइयों और बहनों, देवियों और सज्जनों आप सबको राम–राम करता हूँ। जय श्री कृश्ण, जय जिनेन्द्र करता हूँ। प्रेममय, करुणामय, दयामय, सरलतामय, सादगीमय, मीठा वचनमय। यदि खेत हो, अब कहोगे– महाराज वचन का और खेत का क्या? अरे भाई खेत यदि अच्छा हो और प्रेम के बीज रूपी फसल उगाई जाये तो फिर प्रेम की फसल तो लहलहायेगी और खेत यदि बंजर है,

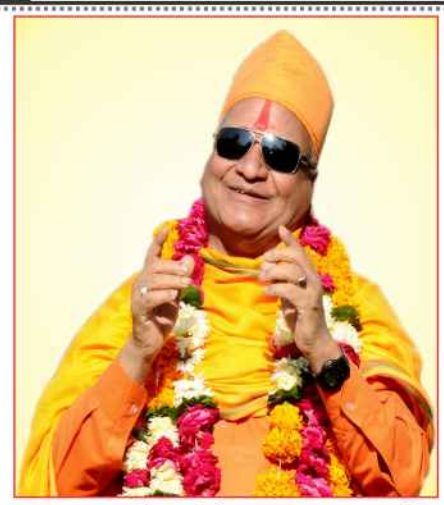

मतलब हमारे कर्महीन नर पावत नाहीं। कर्महीन जो विरंचि गुरु मिल जावे तब भी वे सुधर नहीं सकते।

हमें कर्महीन नहीं बनना अपने तो कर्मवान बनना, सत्कर्मी बनना। करें सदा सत्संग, ऐसा सदा सत्संग में रहना तो अपनी भावना अच्छी रहेगी। खेत यदि अच्छा, बीज भी अच्छा तो फसल अच्छी। अब अपने जीवन को मान लेवें कि– अपने जीवन को खुशी–खुशी गुजारना भी अपने हाथ में और दुखी रखके रोते रहना भी अपने हाथ में।

एक बार क्या हुआ साहब कि एक बहुत बड़ी मंजिल पर कोई घंटा बजाने के लिये ऊपर चढा। अब एक आदमी नीचे से देख रहा था तो वो घंटा बजाते– बजाते नीचे गिर गया। अब नीचे गिर गया तो जो ठीक नीचे देख रहा था उसके कंधे पर गिर गया। अब उसके बेचारे के तो कंधे टूट गये और उस आदमी के लगी ही नहीं। अब उसको हॉस्पीटल में किसी ने पूछा कि बहुत तकलीफ होने के कारण रो रहे हो क्या? बोला– मैं रो इसलिये रहा हूँ कि अपराध किसने किया और सजा किसको मिली। गिरा तो वो और कंधा मेरा टूटा। तो भाई ये तो कर्म की रचना है।

– कैलाश 'मानव'

तूफान का सामना

खरगोश के समान तेज भागकर विश्राम करने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती बल्कि कछुए के समान बिना रूके लगातार चलते रहने से ही लक्ष्य हासिल होगा।

लड़की कार चला रही थी। पास वाली सीट पर पिता बैठे थे। कुछ आगे तेज तूफान दिखाई देने लगा। लड़की पिता से बोली–कार रोक दूँ ?

पिता ने उत्तर दिया–नहीं, कार मत रोको। चलती चलो। कुछ आगे जाने पर तूफान का वेग और तेज हो गया। लड़की कार पर सही नियंत्रण नहीं रख पा रही थी। उसने पिता से पुनः पूछा– अब तो कार रोक दूँ ?

उसने देखा कुछ कारे वहीं सड़क के किनारे पर खड़ी थी और उनके चालक तूफान के गुजरने के इंतजार में थे। बहुत

मुश्किल से वह स्टेयरिंग पर नियंत्रण रखती हुई, पिता की आज्ञानुसार लगातार कार चलाती रही और 2–3 किमी आगे जाने के बाद पिता से पूछ बैठी– आपने उस समय रूकने के लिए क्यों नहीं कहा जब मैं तूफान में बड़ी मुश्किल से कार चला पा रही थी और अब आप रूकने के लिए कह रहे हैं, जबकि तूफान गुजर चुका है।

इस पर पिता ने कहा–जरा पीछे मुड़कर देखो। लड़की ने देखा तो पाया कि पीछे तूफान का वेग बढ़ गया है जबकि वह तूफान को पार कर के आगे निकल चुके है। पिता ने बेटी को समझाया– परिस्थितियां बेहतर होने की प्रतीक्षा में लोग जीवनभर वहीं रह जाते हैं जब जो लोग तूफान के बीच में रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं, वे ही सफल होते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। मित्रो! सतत् रूप से किये गए छोटे –छोटे प्रयायो से बड़े से बड़ा लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है। खरगोश के समान तेज भागकर विश्राम करने से लक्ष्य की प्राति नहीं होती बल्कि कछुए के समान बिना रूके लगातार चलते रहने से ही लक्ष्य हासिल होगा। राह में बाधाएँ कितनी ही क्यों न आएं परंतु प्रयास सदैव अनवरत् होने चाहिए। चरेवैति। चरेवैति।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

देवीलाल ने अपने प्रिय भाई का अत्यन्त स्नेह से स्वागत किया। मदन ने सगाई की बात बताई तो देवीलाल प्रसन्न हो गया और उसने कहा सोने की तू चिन्ता मत कर, जो मां का है वो सब तेरा है। पर मदन ने अब पांचोरा से रिश्ता खत्म करने की ठान ली। एक पत्र लिख कर अब भीण्डर ही रहने का अपना निर्णय जता दिया। मदन ने पत्र में विनम्रतापूर्वक लिखा कि भगवान ने आपको बहुत कुछ दिया है, रुपया पैसा जमीन जायदाद, किसी चीज की कमी नहीं है। आपको तो कई दत्तक पुत्र मिल जायेंगे मगर मेरा मां जाया भाई एक ही है। बड़े भाई के त्याग से छोटे भाई का विवाह सानन्द सम्पन्न हो गया।

दोनों भाइयों ने मिल कर भीण्डर में ही एक बर्तन की दुकान लगा ली। धीरे धीरे कपड़े व अन्य सामान भी रखने लगे। मदन की गृहस्थी अच्छी चलने लगी। देवीलाल ने शादी नहीं की और समस्त जीवन छोटे भाई के कल्याण को समर्पित कर दिया। समय व्यतीत होता रहा, मदन का परिवार बढता रहा। पत्नी सोहनी भी धर्म–ध्यान में बहुत अभिरूचि रखती थी।

मदन गीता का पाठ करता तो सोहनी को भी थोड़ी थोड़ी याद हो गई। पढी लिखी तो थी नहीं। उस जमाने में स्त्रियों को पढाते भी कहां थे। पहली दूसरी कक्षा तक पढी होगी फिर भी समझदारी उसमें कूट–कूट कर भरी थी। अपने बच्चों में धर्म का ज्ञान भरने की उसकी हरदम कोशिश रहती।

अंश - 002

घमण्ड को गिराना है

एक राजा भगवान महावीर स्वामी से मिलने जाया करते थे। वे महावीर को कीमती आभूषण और अन्य उपहार देने की कोशिश करते थे। लेकिन, स्वामीजी हर बार राजा से कहते थे, इन्हें गिरा दो। राजा उनकी आज्ञा मानकर वे चीजों वहीं गिरा कर लौट जाते थे।

काफी दिन ऐसे ही चलता रहा। एक दिन राजा ने अपने मंत्री से कहा, मैं इतनी कीमती चीजें महावीर स्वामी को देने के ले जाता हूं, लेकिन वे सभी चीजें वहीं गिराने को क्यों कह देते हैं? मैं भी वो चीजें वहीं गिराकर आ जाता हूं।

मैं एक राजा हूं, उन्हें भेंट देना चाहता हूं, लेकिन वे मेरी चीजों का कोई मान नहीं रख रहे हैं। मेरी समझ में ये नहीं आ रहा है कि स्वामीजी ऐसा क्यों कर रहे हैं।

मंत्री बहुत बुद्धिमान था। उसने कहा, आप इस बार खाली हाथ जाएं। कोई भी चीज लेकर ही मत जाइए। फिर देखते हैं, वे क्या गिराने के कहते हैं। राजा को मंत्री की बात अच्छी लगी।

राजा अगली बार खाली हाथ गया तो महावीर स्वामी ने कहा, 'अब खुद को गिरा दो' राजा को समझ नहीं आया कि खुद को कैसे गिराएं? उसने महावीर से कहा, आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं। आप रोज चीजें गिराने के लिए क्यों कह रहे हैं?

महावीर स्वामी ने कहा, आप राजा हैं। आपको लगता है कि आप चीजें देकर किसी को भी जीत सकते हैं। मैंने आपको खुद को गिराने के लिए कहा तो इसका मतलब ये है कि हमारे अंदर जो मैं होता है, वह अहंकार के रूप में होता है। मैं ये कहना चाहता हूं कि अपना अहंकार गिरा दो और फिर यहां खड़े रहो। राजा को बात समझ आ गई कि गुरु के सामने घमंड लेकर नहीं जाना चाहिए।

गुड़ है गुणकारी

सदियों के मौसम मे गन्ने से बना हुआ गुड़ कितना गुणकारी है। खानपान में इसका अलग महत्व हैं । यह शरीर में खून की होने वाली कमी को रोकता है इसके अतिरिक्त ये एक प्रभावशाली एंटीबायोटिक हैं। खासकर सर्दी के मौसम में इसका इस्तेमाल सभी आयु के लोगों के लिए बेहद लाभकारी है।

सर्दी जुकाम का उपचार है गुड़ – गुड़ तिल की बर्फी खाने से जुकाम की कठिनाई समाप्त हो जाती है। इसे खाने से सर्दी में भी गर्मी बनी रही है।

कफ में है असरदार – सर्दी में कफ की कठिनाई से लोग परेशान रहते हैं। सर्दियों से होने वाली परेशानियों में गुड़ बेहद असरदार होता है। इन परेशानियों में आप गुड़ की चाय पी सकती है। ठंड में अदरक, गुड़ व तुलसी के पत्तों का काढ़ा बनाकर पीना स्वास्थ्य के लिए ज्यादा फायदेमंद होता है।

अस्थमा को रखे दूर – अस्थमा में गुड़ बेहद फायदेमंद होता है। एक कप घिसी हुई मूली में गुड़ व नींबू का रस मिला कर करीब 20 मिनट तक पकाएं। इस मिलावट को रोजाना एक चम्मच खाएं। इससे अस्थमा में बहुत ज्यादा लाभ होगा।

फेफड़ों के लिए फायदेमंद – गुड़ में सिलेनियम नाम का एक तत्व पाया जाता है जो एक एंटीऑक्सिडेंट है। ये हमारे गले व फेफड़े को इंफेक्शन से बचाता है व शरीर को स्वस्थ रखने में हमारी मदद करता है।

नाक की एलर्जी में है फायदेमंद – जिन लोगों को नाक की एलर्जी है उन्हें रोज सवेरे भूखे पेट 1 चम्मच गिलोय व 2 चम्मच आंवले के रस के साथ गुड़ का सेवन करना चाहिए। ऐसा प्रतिदिन करने से नाक की एलर्जी में लाभ मिलता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

जब सोहन जी विजयवर्गीय साहब वो भी स्वर्ग पधारे गये, उन्होंने जब कहा था– कलेक्टर साहब से मिलने गये तो देखा कि उनकी कार आयी नहीं थी। रेस्ट के लिये गेट के पास खड़े हो गये थे कि कार आती हुई दिखेगी और चले जायेंगे। जेब से चने निकालकर खा रहे थे, डेढ़ बजे का समय हो गया था, भूख लग रही थी। कलेक्टर साहब निकल रहे थे, उन्होंने देख लिया था। जैसे ही चेम्बर में मिलने गये, अच्छा जेब से निकालकर क्या खा रहे थे, नन्दवाना साहब और सोहनलाल जी विजयवर्गीय साहब? नन्दवाना जी बोले– बावजी डेढ़ बज गये, भूख लगने लग गयी तो चने खा रहे थे। चने खाकर गुजारा कर रहे थे। काम करना काम तो ईश्वर करवाता है अपने हाथ में क्या है?

मनक बढ़ग्या मोकला, मिटग्यो मनका चार।
लाख दो लाख में, मनक मिले दो–चार

मुझे तो बहुत मनक मिले, मुझे तो बहुत परमात्मा की कृपा हुई। मुझे तो रतनचंद जी राँका साहब मिले, राँका केबल्स, बहुत प्रेम से दान दिया, कई घोषणा भी की थी। राँका साहब इस संसार में नहीं रहे, घोषणा घोषणा ही रह गयी। कोई बात नहीं, जो दिया है वो भी कृपा है। एक रुपया भी आपको किसी ने दान दिया हो या उधार दिया, तो उसका जीवन भर कभी एहसान मत भूलियेगा। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने आपत्तिकाल में अपने मित्र से पाँच–दस रुपये उधार लिये थे। जब समय उचित आया तो वो पांच दस रुपये पचास बार लौटाये। मित्र कहता मैंने तो एक ही बार दिये, ईश्वरचंद विद्यासागर कलकता के समाजसेवी ने कहा था मित्र तुमने मुझे तकलीफ में मदद की। जब डूब रहा था तो तिनके का सहारा लिया था। मैं जीवनभर चुकाता रहूँ, तो भी मैं आपके एहसान से मुक्त नहीं हो सकता, ऐसा जीवन रखना है। 1986 समाप्त हो गया, 1987 में उदयपुर में ही मेरा ट्रांसफर लोकल हुआ, अंबामाता जाया करता था।

हाथीपोल होकर के आयुर्वेदिक कॉलेज के पास। वहाँ से डी.ई.टी. डिविजनल इंजीनियर टेलिकम्यु–निकेशन बी.एन. कॉलेज के सामने आया। उस समय टी.आर. सक्सेना की एक बिल्डिंग दलाल पेट्रोल पंप के सामने ले ली गई थी किराये की, वहाँ बैठने लगा। हजारों बिल जारी करना उनका हिसाब रखना, उनके पैसे मँगवाना, जमा करना, जिनका जमा हो जाये जमा करना।

ठाकुर जी की बड़ी कृपा हेड साहब रवानी जी उतरप्रदेश के कई कार्यकर्ता, क्लर्क महोदय। उदयपुर 1987 का जनवरी–फरवरी महीना, रात आयेगी–दिन होगा। ये सृष्टि का कर्म चलता रहेगा महाराज।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 355 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023